यहूदा

यीशु मसीह के सेवक और याकूब के भाई यहूदा की
ओर से तुम लोगों के नाम जो परमेश्वर के प्रिय तथा
यीशु मसीह के लिये सुरक्षित तथा परमेश्वर द्वारा बुलाये
गये हैं। 2तुम्हें दया, शांति और प्रेम बहुतायत से प्राप्त
होता रहे।

पापी दण्ड पायेंगे

3प्रिय मित्रो, यद्यपि मैं बहुत चाहता था कि तुम्हें उस
उद्धार के विषय में लिखूँ, जिसके हम भागीदार हैं। मैंने
तुम्हें लिखने की और तुम्हें प्रोत्साहित करने की
आवश्यकता अनुभव की ताकि तुम उस विश्वास के
लिये संघर्ष करते रहो जिसे परमेश्वर ने संत जनों को
सदा सदा के लिये दे दिया है। 4क्योंकि हमारे समूह में
कुछ लोग चोरी से आ घुसे हैं। इन लोगों के दण्ड के
विषय में शास्त्रों ने बहुत पहले ही भविष्यवाणी कर दी
थी। ये लोग परमेश्वर विहीन हैं। इन लोगों ने परमेश्वर
के अनुग्रह को भोग–विलास का एक बहाना बना डाला
है तथा ये हमारे प्रभु तथा एकमात्र स्वामी यीशु मसीह
को नहीं मानते। 5मैं तुम्हें स्मरण कराना चाहता हूँ
यद्यपि तुम तो इन सब बातों को जानते ही हो कि जिस
प्रभु ने पहले अपने लोगों को मिस्र की धरती से बचा
कर निकाल लिया था, बाद में जिन्होंने विश्वास को
नकार दिया, उन्हें किस प्रकार नष्ट कर दिया गया।
6मैं तुम्हें यह भी याद दिलाना चाहता हूँ कि जो दूत
अपनी प्रभुसत्ता को बनाये नहीं रख सके, बल्कि जिन्होंने
अपने निजी निवास को उस भीषण दिन के न्याय के
लिये अंधकार में जो सदा के लिये है बन्धनों में रखा है।
7इसी प्रकार मैं तुम्हें यह भी याद दिलाना चाहता हूँ
कि सदोम और अमोरा तथा आस–पास के नगरों ने
इन दूतों के समान ही यौन अनाचार किया तथा
अप्राकृतिक यौन सम्बन्धों के पीछे दौड़ते रहे। उन्हें
कभी नहीं बुझने वाली अग्नि में झोंक देने का दण्ड
दिया गया। वे हमारे लिये उदाहरण के रूप में स्थित हैं।
8ठीक इसी प्रकार हमारे समूह में घुस आने वाले ये
लोग अपने स्वप्नों के पीछे दौड़ते हुए अपने शरीरों को
विकृत कर रहे है। ये प्रभु के सामर्थ्य को उठा कर
ताक पर रख छोड़ते हैं तथा महिमावान स्वर्गदूतों के
विरोध में बोलते हैं।
9प्रमुख स्वर्गदूत मीकाईल जब शैतान के साथ विवाद
करते हुए मूसा के शव के बारे में बहस कर रहा था तो
वह उसके विरुद्ध अपमानजनक आक्षेपों के प्रयोग का
साहस नहीं कर सका। उसने मात्र इतना कहा, "प्रभु
तुझे डाँटे–फटकारे।"
10किन्तु ये लोग तो उन बातों की आलोचना करते
हैं, जिन्हें ये समझते ही नहीं और ये लोग

बुद्धिहीन पशुओं के समान जिन बातों से सहज रूप
से परिचित हैं, वे बातें वे ही हैं जिनसे उनका नाश होने
को है।
11उन लोगों के लिये यह बहुत बुरा है कि उन्होंने
कैन का सा वही मार्ग चुना। धन कमाने के लिये
उन्होंने अपने आपको वैसे ही गलती के हवाले कर
दिया जैसे बिलाम ने किया था। सो वे ही नष्ट हो
जायेंगे जैसे कोरह के विद्रोह में भाग लेने वाले नष्ट
कर दिये गये थे। 12ये लोग तुम्हारे प्रीतिभोजों में उन
छुपी हुई चट्टानों के समान हैं जो घातक हैं। ये लोग
निर्भयता के साथ तुम्हारे संग खाते–पीते हैं किन्तु उन्हें
केवल अपने स्वार्थ की ही चिंता रहती है। वे बिना
जल के बादल हैं। वे पतझड़ के ऐसे पेड़ हैं जिन पर
फल नहीं होता। वे दोहरे मरे हुए हैं। उन्हें उखाड़ा जा
चुका है।
13वे समुद्र की ऐसी भयानक लहरें हैं, जो अपने
लज्जापूर्ण कार्यों का झाग उगलती रहती हैं। वे
इधर–उधर भटकते ऐसे तारे हैं जिनके लिये अनन्त
गहन अंधकार सुनिश्चित कर दिया गया है।
14आदम से सातवीं पीढ़ी के हनोक ने भी इन
लोगों के लिये इन शब्दों में भविष्यवाणी की थी:
"देखो, वह प्रभु अपने हज़ारों–हज़ार स्वर्गदूतों के साथ
आया।
15सब लोगों का न्याय करने के लिए आ रहा है।
ताकि लोगों ने जो बुरे काम किये हैं, उन्हें उनके लिये
और उन्होंने जो परमेश्वर के विरुद्ध बुरे वचन बोले हैं,
उनके लिये दण्ड दे।"
16ये लोग चुगलखोर हैं और दोष ढूँढने वाले हैं। ये
अपनी इच्छाओं के दास हैं तथा अपने मुँह से अहंकारपूर्ण
बातें बोलते हैं। अपने लाभ के लिये ये दूसरों की चापलूसी
करते हैं।

जतन करते रहने के लिये चेतावनी

17किन्तु प्यारे मित्रो, उन शब्दों को याद रखो जो
हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रेरितों द्वारा पहले ही कहे जा
चुके हैं। 18वे तुमसे कहा करते थे कि "अंत समय में
ऐसे लोग होंगे जो परमेश्वर से जो कुछ संबंधित होगा
उसकी हँसी उड़ाया करेंगे।" तथा वे अपवित्र इच्छाओं
के पीछे-पीछे चला करेंगे। 19ये लोग वे ही हैं जो फूट
डलवाते हैं।

20ये लोग अपनी प्राकृतिक इच्छाओं के दास हैं।
इनके आत्मा नहीं है। किन्तु प्रिय मित्रो तुम एक दूसरे
को आध्यात्मिक रूप से अपने अति पवित्र विश्वास में
सुदृढ़ करते रहो। पवित्र आत्मा के साथ प्रार्थना करो।
21हमारे प्रभु यीशु मसीह की करुणा की बाट जोहते हुए
जो तुम्हें अनन्त जीवन तक ले जायेगी परमेश्वर की
भक्ति में लीन रहो। 22जो डावाँडोल हैं उन पर दया
करो। 23दूसरों को आगे बढ़ कर आग में से निकाल
लो। किन्तु दया दिखाते समय सावधान रहो तथा उनके
उन वस्त्रों तक से घृणा करो जिन पर उनके पापपूर्ण
स्वभाव के धब्बे लगे हुए हैं।

परमेश्वर की स्तुति

24अब उसके प्रति जो तुम्हें गिरने से बचा सकता है
तथा उसकी महिमापूर्ण उपस्थिति में तुम्हें महान आनन्द
के साथ निर्दोष करके प्रस्तुत कर सकता है। 25हमारे
प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमारे उद्धारकर्त्ता उस एकमात्र
परमेश्वर की महिमा, वैभव, पराक्रम और अधिकार
सदा सदा से अब तक और युग-युगांतर तक बने रहें।
आमीन!